KEEP THE TORCH OF DHAMMA A LIGHT

LET IT SHINE BRIGHTLY IN YOUR DAILY LIFE.

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, आश्विन पूर्णिमा, 28 अक्तूबर, 2023, वर्ष 53, अंक 5

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

गारवो च निवातो च, सन्तुट्ठि च कतञ्ञुता।
कालेन धम्मस्सवनं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥
– खुद्दकपाठपाळि, मङ्गलसुत्तं - ८

(पूजनीय व्यक्तियों को) गौरव देना, विनीत रहना, संतुष्ट रहना, दूसरों द्वारा किये गये उपकार के प्रति कृतज्ञ रहना और समय-समय पर धर्म-श्रवण करना– यह उत्तम मंगल है।

आत्मकथन - 2

मंगलमयी कृतज्ञता

कृतज्ञता का भाव धर्म का एक अपरिहार्य अंग है। कृतघ्नता धर्मशून्यता का प्रतीक है और धर्म के सर्वथा अभाव का भी। भारत ही नहीं, विश्व के सभी संप्रदायों की धार्मिक भावनाओं में कृतज्ञता का एक विशिष्ट महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सौभाग्य से मैं जिन माता-पिता के यहां जनमा, जिस परिवार में पला और जिस देश के लोगों के बीच रहा, वहां मेरे लिए कृतज्ञता का महत्त्व सर्वदा सर्वोपरि रहा।

बात तब की है जब मैं बहुत छोटा था। उस समय मेरी उम्र कोई साढ़े चार-पांच वर्ष की रही होगी। परिवार के सभी सदस्य मांडले (ब्रह्मदेश) से अपने पूर्वजों की भूमि चुरू (राजस्थान) में किसी धार्मिक अनुष्ठान के लिए आये थे। वहीं संयुक्त परिवार के तीनों भाइयों ने निर्णय किया कि बुजुर्गों की टूटी-फूटी, खंडहर हुई इमारत के स्थान पर एक नयी हवेली का निर्माण किया जाय। इसे क्रियान्वित करने के लिए बड़े ताऊजी अपनी इकाई सहित यानी, अकेले वहीं रह गये। मेरे माता-पिता ने मुझे भी उनके पास छोड़ दिया। चंदा बुआ भी वहीं रुक गयी।

चंदा बुआ बाल-विधवा थी। उसके ससुराल में कोई नहीं बचा था। कुछ दिनों अत्यंत कष्ट के दिन बिताकर वह जीवनभर के लिए अपने पीहर में ही आकर रहने लगी थी। पीहर में भी हमारी दादी का देहांत हो चुका था। उनकी चार संतानों में चंदा बुआ सबसे बड़ी थी। उस समय मेरे पिताश्री तो बालक ही थे। दोनों ताऊजी भी वयस्क नहीं हुए थे। यद्यपि उन दिनों पुरुषों द्वारा पुनर्विवाह किया जाना बहुत प्रचलित था परंतु दादाजी ने जीवनभर विधुर रहना ही श्रेयस्कर समझा। अत: पिताश्री और दोनों ताऊजी के पालन-पोषण का सारा दायित्व चंदा बुआ ने ही सँभाला था। उसका स्वभाव बहुत तेज था, पर हम बच्चों के प्रति उसे गहरा प्यार था, लगाव था।

चंदा बुआ ने मुझे समीप की एक पाठशाला में भर्ती करवा दिया। वह एक छोटा-सा टूटा-फूटा पुराना मंदिर था, जिसमें एक छोटा-सा चौक था। यही पाठशाला थी। इसी में मेरी उम्र के और मुझसे कुछ बड़े 20-25 लड़के पढ़ने आते थे। गुरुजी एक वृद्ध सज्जन थे। वे एक आंख से काने थे। लकड़ी लेकर चलते थे। नाम संभवत: काशीराम रहा होगा या केशवराव या ऐसा ही कुछ और। परंतु कासु गुरुजी के नाम से ही जाने जाते थे, जो कि उपरोक्त किसी नाम का ही लौकिक अपभ्रंश बन गया होगा। इसलिए मैं उन्हें कासु गुरुजी के नाम से ही याद करता हूं। वे पढ़ाने की कला में बड़े माहिर थे, इसका प्रमाण तो यही है कि कुल छ: महीने में ही उन्होंने मुझ जैसे नौसिखिये बालक को पूरी वर्णमाला ही नहीं बल्कि पूरी बारहखड़ी रटवाकर याद करवा दी। इसी प्रकार एक से सौ तक गिनती ही नहीं बल्कि दस तक के पहाड़े और उसके बाद सवैये, डेढ़े, ढाये और घूंटे यानी सवा, डेढ़, अढ़ाई और साढ़े तीन के पहाड़े याद करवा दिये थे जो कि मेरी आगे की पढ़ाई में बहुत काम आये।

उनकी पढ़ाई रटंत-विद्या से होती थी। पाठ रटाने की उनकी विद्या बड़ी अद्भुत थी, आकर्षक थी। आजकल की नर्सरी राईम से कई गुना अधिक असरकारक थी। वर्णमाला के हर अक्षर के लिए लोकगीत की-सी एक कड़ी थी, जो बड़े लहजे के साथ गवायी जाती थी। इसी प्रकार गिनती और पहाड़े भी एक अत्यंत कर्णप्रिय लहजे में गवाये जाते थे। छ: महीने बाद मांडले (बर्मा) की प्राइमरी स्कूल में भर्ती हुआ। वहां पढ़ाने की विधि सर्वथा भिन्न मिली। अत: उस प्राथमिक पढ़ाई के मजेदार गीतों के बोल धीरे-धीरे अतीत की विस्मृति में विलीन हो गये। आज उन गीतों के जो इक्के-दुक्के बोल याद आ जाते हैं, वे अब भी मन में गुदगुदी जगा देते हैं।

दैनिक पढ़ाई एक गीत से आरंभ होती थी, जिसका पहला बोल था "सीधो बरणो"। अर्थ समझें या न समझें पर नित्य इस पाठ से पढ़ाई आरंभ करने में बड़ा आनंद आता था। वर्णमाला की पढ़ाई जिस गीत से रटायी जाती थी, उसका बोल था "कक्को कोडको", यह "क" के लिए। और आगे का एक और वर्ण याद रह गया "गग्गो गोरी गाय", यह "ग" के लिए वर्णमाला के एक अन्य अक्षर का पाठ भी इसलिए नहीं भूल सका क्योंकि उसमें हम बच्चों के गीत गाने के साथ-साथ एक-दो कदम भागने का लुभावना अभिनय भी करना पड़ता था। वह था "त" वर्ग का अंतिम अक्षर "न", जिसके लिए गीत के बोल थे - "आगै नन्नो भाग्यो जाय"।

इसी प्रकार गिनती शुरू होती थी, "इक्यावळी एक, दूवै दो" से और इसका अंत बड़े रोचक ढंग से होता था— "एकै ऊपर बिंदी दो, गिणै-गिणाये पूरे सौ।"

हम इन पाठों को बड़ी मस्ती से गाया करते थे। इसी कारण ये बड़ी सरलता से याद हो जाते थे।

रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

मुझे याद है, उन दिनों गर्मी का मौसम था। चुरू अपनी ठंड के लिए जितना बदनाम है उतना ही गर्मी के लिए भी। बड़ी तेज गर्मी के कारण दोपहर के समय पाठशाला में ही दो घंटे सोने की छुट्टी मिलती थी। सभी बच्चे मंदिर की फेरी के लिए बनी गैलरी में सो जाते थे। सोने का समय पूरा होने पर घंटी बजती थी और हम सब उठकर फिर पाठ रटने लगते थे। परंतु उस समय भी गर्मी तो बहुत तेज रहती ही थी। अत: कुछ एक आलसी लड़के देर तक सोये रहते थे। बूढ़े गुरुजी को पता ही नहीं चलता था। परंतु किसी के शिकायत कर देने पर या कभी स्वयं उठकर देख लेने पर गुरुजी उन आलसी बच्चों की खूब फटकारते थे। अपने माता-पिता की प्रताड़ना के कारण ही उन्हें पाठशाला आना पड़ता था, अन्यथा उन बच्चों की पढ़ने में कोई रुचि नहीं थी। वे गुरुजी से खार खाये बैठे थे। गुरुजी अन्य बच्चों को न फटकारते, बल्कि उन्हीं को जो आलसी थे। उनके मन में इसका बहुत मलाल था। गुरुजी जब फटकारते तब "हाउ" जैसी कोई आवाज करते थे। मुझे याद नहीं पर शायद यह उनका तकियाकलाम रहा हो। उपद्रवी विद्यार्थियों ने इसे ही लेकर एक कविता रच डाली।

"कासु काणो, छोरां नैं पढ़ाणो।

कासु बोलै हाऊ, मैं कासु को ताऊ॥"

सायंकाल पाठशाला की छुट्टी होने पर घर की ओर भागते हुए ये बच्चे मिलकर जोरों से यह गीत गाते थे। धीरे-धीरे कुछ-एक अन्य विद्यार्थी भी उनका साथ देने लगे। बार-बार सुनते-सुनते यह पद मुझे भी याद हो गया। कह नहीं सकता, परंतु हो सकता है यह गीतमय नारा लगाने में मैंने भी कभी उन सहपाठियों का साथ दिया हो।

पाठशाला से जब-जब घर लौटता तो स्नेहमयी चंदा बुआ मुझसे पूछती कि आज क्या पढ़कर आया? मैं जितना-जितना पढ़कर आता, उसे उसी लहजे में दोहरा देता। वह बहुत प्रसन्न होकर मुझे गोद में उठा लेती और छाती से चिपका लेती। नयनों में खुशियों का समंदर भर कर मुझे चूमती और सिर पर हाथ फेरती। मुझे यह सब बहुत अच्छा लगता।

एक दिन पाठशाला से लौटने पर बुआ ने जब पूछा कि आज क्या पढ़ कर आया? तो मैंने बड़े सहज और सरल भाव से उन उपद्रवी बालकों की कविता सुना दी।

"कासु काणो, छोरां नैं पढाणो।

कासु बोलै हाऊ, मैं कासु को ताऊ॥"

सुनते ही बुआ की आंखे लाल हो गयीं। वह बोली, "क्या बोला रे?"

वैसे चंदा बुआ के कोप से सभी डरते थे, परंतु वे हम बच्चों पर बहुत स्नेह उँडेलती, कभी कोप नहीं किया। पहली बार बुआ का कोप देखकर मेरा दिल दहल गया। मैंने डरी-डरी, सहमी-सहमी आवाज में उत्तर दिया "बुआ, कुछ और बच्चे ऐसा गाते हैं। मैंने भी उनसे सुनकर याद कर लिया।"

सहसा बुआ का कोप दूर हो गया और सदा की भांति उसके हृदय से वात्सल्य का झरना फूट पड़ा। उसने मुझे गोद में लेकर बड़े प्यार से समझाया—

"देख बेटे, अपने गुरु के बारे में ऐसी गंदी बात कभी नहीं बोलनी चाहिए। इससे बड़ा पाप लगता है। ऐसा पापी बालक कभी विद्या नहीं सीख सकता। कासु महाराज तुम्हें इतने प्यार से पढ़ाते हैं और उनकी पढ़ाई गयी सारी बातें तुम यहां आकर दुहरा देते हो। और तू उनका उपकार न मान कर उल्टे बुरे छोरों की संगत में आकर उन्हें गाली देता है? तुझे विद्या कैसे आयेगी रे? किसी का उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए।"

सहसा बुआ को कोई पुरानी बात याद आ गयी। उसकी आंखें छलछला आयीं। उसने कहा, बहुत वर्षों पहले मैंने बहुत गरीबी के दिन काटे थे। परिवार में कोई कमाने वाला नहीं था और घर में एक वक्त के खाने का भी प्रबंध नहीं था। उस समय मैं एक ऊंचे कुल की बेटी, एक ऊंचे कुल की बहू, किसी के सामने हाथ भी कैसे पसारती? कुछ-एक घरों से अनाज ले आती और अपने घर में चक्की से पीसकर उन्हें आटा दे आती। इससे जो मजदूरी मिलती, उससे पेट पालती। फिर दिन फिरे। लेकिन अब भी जब कभी उनको याद करती हूं तो जिन्होंने मुझे उन दिनों आटा पीसने का काम दिया, उनका उपकार नहीं भूलती। बेटे, किसी का उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए। चाहे किसी से मुट्ठीभर आटा ही मजदूरी के रूप में मिले, पर उपकार तो उपकार ही है। कासु महाराज तो तुम्हें विद्या देते हैं जो कि इतनी अनमोल है। विद्या से बढ़कर और क्या धन होगा भला? और तू उनका उपकार मानना तो दूर, उनके प्रति ऐसे गंदे शब्द बोल रहा है?"

द्रवित हृदय से निकला हुआ स्नेहमयी बुआ का उपदेश सुनकर मेरी भी आंखें भर आयीं। मैंने बुआ से कहा कि मैं फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा।

बुआ ने कहा, चल मेरे साथ, कासु महाराज से क्षमा मांग और उनको यह वचन दे कि अब ऐसी भूल कभी नहीं करेगा। वह मुझे तुरंत कासु महाराज के पास ले गयीं। मैंने उनके पांव छूकर उनसे क्षमा मांगी। भविष्य में कभी ऐसी भूल न करने का वचन दिया। उन्होंने बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, इसमें तेरा दोष नहीं है बेटा! बुरे बच्चों की संगत से ऐसा हो ही जाता है। बुरों की संगत कभी नहीं करनी चाहिए। ऐसे बच्चों से सदा दूर रहना चाहिए।

मैं यह जानकर बहुत खुश हुआ कि गुरुजी मुझसे नाराज नहीं है। मैं बुआ के साथ प्रसन्नचित्त घर लौटा। बुआ भी बहुत खुश थी।

मैं खूब समझता था कि मैंने गुरुजी के प्रति अपशब्द वाला जो गीत गाया, वह बिल्कुल नासमझी में ही गाया था। गुरुजी के प्रति मेरे मन में जरा भी अनादर का भाव नहीं था। परंतु अनजाने में ही क्यों न हो, ऐसे शब्द मुँह से निकले, यही कितना बड़ा पापकर्म हुआ। कृतज्ञता की कल्याणी शिक्षा का जो यह बीज चंदा बुआ ने मेरे बाल-मानस में बोया, वह बड़ा कल्याणकारी साबित हुआ।

मुझे याद है, कुछ समय के बाद कासु गुरुजी का शरीर शांत हुआ और उन शरारती लड़कों ने एक और गीत बनाया—

"कालीजी कै मंदिर की धोळी धजा।

कासु मरगो खूब मजा।"

यह सुनकर मुझे गुरुजी के शरीर छूटने की सूचना से जो दु:ख हुआ, उससे कहीं अधिक दु:ख उन नादान सहपाठियों की नादानी पर हुआ, उनकी बदतमीजी पर हुआ। मेरी आंखें भर आयीं।

बचपन में मिला कृतज्ञता-धर्म का यह पावन बीज अंकुरित होकर खूब फला-फूला। जब विपश्यना-विद्या के संपर्क में आया और भगवान बुद्ध की वाणी देखी तो यह पढ़कर मन अत्यंत संतुष्ट-प्रसन्न हुआ कि भगवान ने भी **'कृतज्ञता'** को उत्तम मंगल धर्म बताया है और दुर्लभ धर्म कहा है। उन्होंने कहा है,

'इमे द्वे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मिं' संसार में ये दो पुद्गल दुर्लभ हैं—

'यो च पुब्बकारी' वह जो किसी का उपकार करने में पहल करता है यानी, बदले में कुछ पाने का पूर्व चिंतन करके नहीं, बल्कि उपकार के लिए ही उपकार है। और दूसरा—

'यो च कतञ्ञू कतवेदी' वह जो कृतज्ञ है, कृतवेदी है।

बचपन से चला आ रहा कृतज्ञता का यह दुर्लभ धर्म भगवान बुद्ध की विपश्यना-विद्या पाकर पुष्ट से पुष्टतर होता गया।

पुष्ट हुई कृतज्ञता उन भगवान बुद्ध के प्रति जिन्होंने भगवती विपश्यना-

विद्या को पुनर्जीवित किया और जीवनभर करुण चित्त से, बिना किसी भेद-भाव के सबको वितरित करते रहे। कृतज्ञता आचार्य परंपरा के उन संतों के प्रति, जिन्होंने इसे शुद्ध रूप में जीवित रखा और कृतज्ञता परम पूज्य गुरुदेव ऊ बा खिन के प्रति, जिन्होंने इतने वात्सल्य भाव से यह अनमोल रत्न मुझे विरासत में दिया।

कृतज्ञता सचमुच उत्तम मंगल धर्म है, दुर्लभ धर्म है। इसके पुष्ट होते रहने में मंगल ही मंगल है, कल्याण ही कल्याण है।

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का.

(—वर्ष 25, बुद्धवर्ष 2539, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, दि. 5-1-1996, अंक 7)

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न: आप हमेशा कर्मकांड की निंदा करते हैं, लेकिन हमारे आदर और कृतज्ञता व्यक्त करने में क्या गलत है?

गोयन्काजी: इसमें कुछ भी गलत नहीं है। आदर और कृतज्ञता कर्मकांड नहीं है, कर्मकांड तब बनता है जब आप समझ नहीं पाते कि आप क्या कर रहे हैं और कर केवल इसलिए रहे हैं क्योंकि किसी ने आपसे ऐसा करने के लिए कहा है। यदि आप गहराई से समझते हैं कि "मैं अपने माता-पिता का आदर कर रहा हूं" या "मैं किसी विशेष देवता या देवी का आदर कर रहा हूं"– तो देखें: उस देवता के गुण क्या हैं? उस देवी के क्या गुण हैं? क्या मैं अपने अंदर वही गुण विकसित करके उस देवी-देवता के प्रति सच्चा आदर व्यक्त कर रहा हूं? क्या मैं अपने माता-पिता में जो अच्छे गुण हैं उन्हें विकसित करके उनके प्रति सच्चा आदर व्यक्त कर रहा हूं? यदि उत्तर हां है, तो आप यह कार्य समझदारी से कर रहे हैं, और यह कोई कर्मकांड नहीं हैं। लेकिन यदि आप यंत्रवत ढंग से कोई कार्य करते हैं तो वह एक कर्मकांड बन जाता है।

प्रश्न: क्या हम विपश्यना के माध्यम से पूर्ण परिवर्तन और पूर्ण सुख प्राप्त कर सकते हैं?

गोयन्काजी: यह एक सतत प्रगतिशील प्रक्रिया है। जैसे-जैसे आप काम करना शुरू करेंगे, आप पाएंगे कि आप अधिक से अधिक सुख का अनुभव कर रहे हैं और अंततः आप उस स्थिति में पहुँच जाएंगे जो पूर्ण सुख है। आप अधिक से अधिक परिवर्तित होते जाएंगे और आप उस चरण तक पहुँच जाएंगे जिसे संपूर्ण परिवर्तन कहें। यह प्रगतिशील पथ है।

प्रश्न: हमें सांस के साथ काम क्यों करना चाहिए?

गोयन्काजी: सांस ही सत्य है। सांस आपके मन और शरीर से संबंधित है और आप यहां मन एवं पदार्थ का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए हैं। तो आप सांस से शुरुआत करते हैं और फिर मन एवं शरीर के गहरे स्तर पर पहुँचते हैं ।

प्रश्न: क्या आप पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं?

गोयन्काजी: मेरे मानने या न मानने से आपको कोई फायदा नहीं मिलेगा। ध्यान करेंगे तो आप एक ऐसे चरण पर पहुँच जाएंगे जहां आप अपना अतीत देख सकते हैं, और भविष्य भी। विश्वास तभी करें। किसी बात पर सिर्फ इसलिए विश्वास न करें क्योंकि आपके गुरु ऐसा कहते हैं। अन्यथा आप गुरु के चंगुल में फँस जायेंगे, जो धर्म के विरुद्ध है।

प्रश्न: क्या आप नास्तिक हैं?

गोयन्काजी: (हँसते हुए) यदि "नास्तिक" से आपका तात्पर्य वह व्यक्ति है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता है, तो नहीं, मैं नहीं हूं। मुझे भगवान में विश्वास है। लेकिन मेरे लिए ईश्वर कोई काल्पनिक व्यक्ति नहीं है। मेरे लिए सत्य ही ईश्वर है। परम सत्य ही परमेश्वर है।

प्रश्न: कुशल जीवन जीने के लिए, क्या हमें ईश्वर की शक्ति की आवश्यकता नहीं है?

गोयन्काजी: ईश्वर की शक्ति धम्म की शक्ति है। धर्म ही ईश्वर है। सत्य ही ईश्वर है। जब आप सत्य के साथ होते हैं, धम्म के साथ होते हैं, तब आप भगवान के साथ होते हैं। अपने मन को शुद्ध करके, अपने भीतर ईश्वरीय शक्ति का विकास करें।

प्रश्न: क्या आपने अपना पिछला जन्म देखा है?

गोयन्काजी: हर पल मैं मर रहा हूं, हर पल मैं एक नया जन्म ले रहा हूं। ये प्रक्रिया चलती रहती है और मैं इसका अवलोकन करता रहता हूं।

प्रश्न: विकल्पहीन अवलोकन (choiceless observation) क्या है?

गोयन्काजी: इसका मतलब है कुछ न करना। घटना घट रही है, और आप देख रहे हैं। इस पर यह दार्शनिक मान्यता या वह दार्शनिक मान्यता मत थोपो। कुछ भी थोपो मत, उसे स्वाभाविक रूप से होने दो। जो कुछ भी आपके भीतर स्वाभाविक रूप से घट रहा है वह सत्य है, और सत्य ही ईश्वर है।

प्रश्न: क्या ध्यान ही मुक्ति पाने का एकमात्र तरीका है?

गोयन्काजी: हाँ! मात्र अंध विश्वास के साथ किसी बात को स्वीकार करने से कुछ नहीं मिलेगा। अपनी मुक्ति के लिए काम करना होगा। यह पता लगाना होगा कि आसक्ति कहां है, और फिर उस आसक्ति से बाहर आना होगा। यही विपश्यना है। अपने बंधनों का निरीक्षण करो, अपने दुःख का निरीक्षण करो। तब आपको बंधन का असली कारण, दुःख के असली कारण का पता चलेगा और देखेंगे कि यह कारण कैसे मिटना शुरू हो जाता है। मिटना शुरू होता है तो धीरे-धीरे आप इससे बाहर आने लगते हैं। विपश्यना के अभ्यास यानी, ध्यान करने से ही मुक्ति मिलती है।

[Q&A from the VRI publication: The Gracious Flow of Dhamma]

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री सी व्ही आर कुमार, धम्माराम,भीमावरम के केंद्रीय आचार्य की सहायता
2. श्रीमती कृष्णावेनी चेम्बोलू, धम्माराम,भीमावरम के केंद्रीय आचार्य की सहायता
3. श्री जयेशभाई मेहता, धम्म मधुरा, मदुराई के केंद्रीय आचार्य की सहायता

नव नियुक्तियां

भिक्षु आचार्य

1. Ven. Haldummulle panghadeera thero, Sri lanka
2. Ven.wegahapitiye udayawansha thero, Sri lanka
3. Ven Ellepola Sudhamma Bhante, Sri Lanka

सहायक आचार्य

1. श्रीमती चाँद राजपूत, जम्मू, जम्मू एंड कश्मीर
2. श्रीमती देचेन तिरिचो, लेह, लद्दाख
3. कु. गीता सोलंकी, मुंबई
4. श्री लेखराज शर्मा, जयपुर
5. श्रीमती नंदा गोपकुमार, केरल
6. Mrs. Heide Rehaag, Sri lanka
7. Mr. premachandra konara, Sri lanka
8. Mr. Shi Cheng Zhao, China
9. Mrs. Yu Van Lung, Taiwan (R.O.C.)

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

1. रविवार 19 नवंबर 2023 शताब्दी वर्ष महा शिविर
2. रविवार 10 दिसम्बर 2023, शताब्दी वर्ष महा शिविर
3. रविवार 14 जनवरी 2024, संघ दान और महा शिविर (पू. माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में)
4. रविवार 04 फरवरी, **मेगा इवेंट**-'डॉक्यूमेंट्री फिल्म' का विमोचन और अन्य कार्यक्रम

Online registration: *http://oneday.globalpagoda.org/register* **Eail:** *guruji.centenary@globalpagoda.org* or *oneday@globalpagoda.org*

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः

info@globalpagoda.org or *pr@globalpagoda.org*

रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

विपश्यना विशोधन विन्यास की "पाल" परियोजना

प्रिय धम्म परिवार, गुरु पूर्णिमा के इस अवसर पर विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रोजेक्ट "पाल"- धम्म का खजाना, की घोषणा करते हुए मन बहुत प्रसन्न है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि इस अनमोल धम्म को आचार्यों की शुद्ध परंपरा द्वारा सँभाल कर रखा गया और इसकी प्राचीन शुद्धता के साथ पूज्य श्री एस.एन. गोयन्काजी द्वारा हमें दिया गया। अब इसे अनेकों के लाभ के लिए संभाल कर सुरक्षित रखने की और भविष्य की पीढ़ियों को इसी शुद्ध रूप में प्रदान करने की आवश्यकता है। म्यंमा से लाए हुए ताड़-पत्र और हस्तलिपियां, दुर्लभ पुस्तकें, तसवीरें, कलाकृतियां, ऑडियो और वीडियो टेप के रूप में दुर्लभ सामग्री का विशाल खजाना उपलब्ध है। इसमें गोयन्काजी के दुर्लभतम व्यक्तिगत संग्रह भी शामिल हैं।

"पाल" - धम्म के खजाने का विवरणः

- तसवीरें, छवियां – 20,000 से अधिक
- ऋणात्मक (उल्टी तस्वीरें)= (नेगेटिव्स) 8,000 से अधिक
- पत्र, दस्तावेज़ और प्रतिलेख - 2,10,000 से अधिक
- समाचार पत्र, मासिक पत्रिकाएं – 10,000 से अधिक
- डायरी और नोटबुक्स - लगभग 500
- मुद्रित पुस्तकें – 12,000 से अधिक
- ताड़-पत्र और हस्तलिपियां - लगभग 28
- ऑडियो और वीडियो टेप संग्रह– 3, 000 से अधिक
- पेंटिंग्स – बुद्ध के जीवन पर 130 से अधिक बड़े चित्र संभाल कर रखें हैं।
- शिविर आवेदन फॉर्म – 12 लाख से अधिक (कुछ फॉर्म 1971 के हैं।)

इन सामग्रियों को पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण होने वाले नुकसान के जोखिम से बचाने के लिए, परियोजना 'पाल' – जिसका अर्थ है धम्म शिक्षाओं को सुरक्षित रखना, संभाल कर रखना, तदर्थ एक अत्याधुनिक संरक्षण सुविधा की योजना बनाई गई है, जो लगभग 5,000 वर्ग फुट (Sq ft) क्षेत्र में होगी। इसमें तापमान नियंत्रित वातावरण के साथ आग-प्रतिरोधी स्टोर की सुविधा होगी। ऊपरी मंजिल (सतह) पर होने के कारण यह पानी से भी सुरक्षित रहेगी।

इस परियोजना पर लगभग 300 लाख रुपये खर्च होने का अनुमान है। आने वाली पीढ़ियों के हितार्थ इस पुण्यदायी काम के लिए आपका कोई भी योगदान महत्त्वपूर्ण होगा।

कृपया प्रोजेक्ट 'पाल' - 'धम्म का खजाना' की एक लघु वीडियो देखने के लिए निम्न YouTube लिंक पर क्लिक करें: *https://youtu.be/eK-dJPWnOhs*

कोई भी हमारी वेबसाइट, मोबाइल ऐप, स्कैन, यूपीआई, क्यूआर कोड, नेट बैंकिंग द्वारा ऑनलाइन दान कर सकता है अथवा हमारे पते पर चेक भेज सकता है।

दान-विकल्पों के लिए लिंक: *https://www.vridhamma.org/Donation-to-VRI*

VRI को दान करने पर भारतीय नागरिक 100% आयकर कटौती के लाभार्थी होते हैं।

सबका मंगल हो।

विपश्यना विशोधन विन्यास को दान के लिए बैंक विवरण इस प्रकार हैः—

विपश्यना विशोधन विन्यास, ऐक्सिस बैंक लि., मालाड (प.)

खाता क्र. 911010004132846; IFSC Code: UTIB0000062

संपर्क- 1. श्री डेरिक पेगाडो - 022-50427512/ 28451204

2. श्री बिपिन मेहता - 022-50427510/ 9920052156

3. ईमेल - audits@globalpagoda.org

4. वेबसाइट- *https://www.vridhamma.org/donate-online*

दोहे धर्म के

नमन करुं मैं बुद्ध को, कैसे करुणागार।
दुःख मिटावन पथ दिया, सुखी करन संसार॥

याद करूं जब बुद्ध की, करुणा अमित अपार।
तन मन पुलकित हो उठे, चित छाए आभार॥

नमन करूं गुरुदेव को, कैसे संत सुजान।
कितने करुणा चित्त से, दिया धरम का दान॥

दूहा धरम रा

धरम भोम पर जनमियो, पूरब पुण्य प्रताप।
सुफल जमारो होवियो, मिट्या पाप संताप॥

धन धन धरती धरम की, धन धन बिरमा देस।
सुद्ध धरम पायो अठै, कटै करम का क्लेस॥

धरम देस मँह जनमियो, संत मिल्यो अनमोल।
भवदुख प्यासै जीव नै, इमरत दीन्यो घोल॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड,
वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

धम्म ग्राम
माता विशाखा हैप्पी विलेज सेवाश्रम
(विपस्सी साधकों का निर्माणाधीन सामूहिक निवास स्थल व सेवा केंद्र)
ग्राम- लखाही, श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश, भारत
M. +91 8756187439, 9935310792
E-Mail -happyvillagesociety@gmail.com
www.happyvillagesewashram.com
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74,
सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003,
फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा. 09423187301,
Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, आश्विन पूर्णिमा, 28 अक्तूबर, 2023; वर्ष 53, अंक-5

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 15 OCTOBER, 2023, DATE OF PUBLICATION: 28 OCTOBER, 2023

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076,
244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org